॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥
॥ श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

भगवान महावीर स्वामी जी के 2550वें निर्वाण कल्याणक निमित्ते (भाग-3)

घर घर पाठशाला

3-7 साल के बालक बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति
श्रुतभास्कर, सरस्वती उपासक, श्रुतज्ञान मंदिर संरक्षक, आत्मकुल दिवाकर, शेरे गुजरांवाला
जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा : गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.
शुभ निश्रा प्रदाता : प.पू प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा. की सुशिष्या
साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6

आयोजक : भगवान श्री कल्याण पायर्वनाथ जैन नवयुवक मण्डल, लुधियाना
संचालन समिति : श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मन्दिर , किचलू नगर, लुधियाना
निवेदक : श्री आत्मानन्द जैन सभा (रजि.) लुधियाना

नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो सिद्धाणं

सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं

आचार्य महाराजों को नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं

उपाध्याय महाराजों को नमस्कार हो।

नमो लोए सव्वसाहूणं

लोक में विद्यमान सब साधु महाराज को नमस्कार हो।

एसो पंच-नमुक्कारो

इन पांचों को किया हुआ नमस्कार

सव्व-पावप्पणासणो

सर्व पापों का नाश करने वाला है।

मंगलाणं च सव्वेसिं

और सब मंगलों में,

पढमं हवइ मंगलं

यह प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ मंगल है।

गुरू स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ॥

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ॥

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरुराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ॥

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ॥

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ॥

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी॥

तीर्थंकर को पहचानो
Know Our Trthankar

तीर्थंकर कौन हैं

- तीर्थंकर धर्म बताने वाले आध्यात्मिक गुरू हैं
- तीर्थंकर हमें मोक्ष का मार्ग बताते हैं।
- तीर्थंकर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूपी तीर्थ के संस्थापक हैं

वीतरागी (Vitraagi)

- तीर्थंकर की प्रतिमा क्रूर नहीं होती, शांत होती है।
- तीर्थंकर शस्त्र नहीं रखते।
- तीर्थंकर राग-द्वेष मुक्त होते हैं
- तीर्थंकर की प्रतिमा के साथ कभी कोई स्त्री नहीं होती।

केवलज्ञानी (Kevalgyani)

- तीर्थंकर को दुनिया में प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है।
- तीर्थंकर को भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल का संपूर्ण ज्ञान होता है।

मूर्ति (Idol)

- तीर्थंकर की मूर्ति मुख्यत: पदमासन और काऊसग्ग मुद्राओं में होती है।
- तीर्थंकर की मूर्ति के साथ परिवार भी होता है।
- उनकी मूर्ति को लंछन से पहचान सकते हैं।
- सभी तीर्थंकरों के लंछन भिन्न होते हैं।

घर घर पाठशाला
अष्ट प्रतिहार्य (8 Pratiharya)
1 अशोक वृक्ष (Ashok Vruksh)
2 सुरपुष्प वृष्टि (Sur Pushpa Vrushti)
3 दिव्य ध्वनि Divya Dhwani
4 चामर (Chamar)
5 भामंडल (Bhamandal)
6 छत्र (Chhatra)
7 देव दुंदुभी (Dev Dundubhi)
8 सिंहासन (Sinhasan)
केवल ज्ञान के बाद 8 प्रतिहार्य सदैव तीर्थंकर के साथ ही रहते हैं

जैन साधु का जीवन

घर (House)

- जैन साधुओं का अपना स्थायी घर नहीं होता। वे उपाश्रय में रहते हैं।

भोजन (Food)

- जैन साधु खाना नहीं बनाते, वे गोचरी के लिए घर घर जाते हैं।
- वे उबाला हुआ पानी पीते हैं।
- वे सूर्योदय के पहले और सूर्यास्त के बाद नहीं खाते पीते
- वे भोजन के लिए लकड़ी से बने बर्तन (पात्रा) का उपयोग करते हैं।

वस्त्र (Cloths)

- जैन साधु बिना सिलाई वाले साफ कपड़े पहनते हैं।
- वे रजोहरण (ओघा) से छोटे जीवों को बचाते हैं।
- वे बोलते समय मुंहपत्ति का उपयोग करते हैं।
- वे संथारा और उत्तरपट्टा पर सोते हैं।
- वे अपने बालों को लोच करके निकालते हैं।

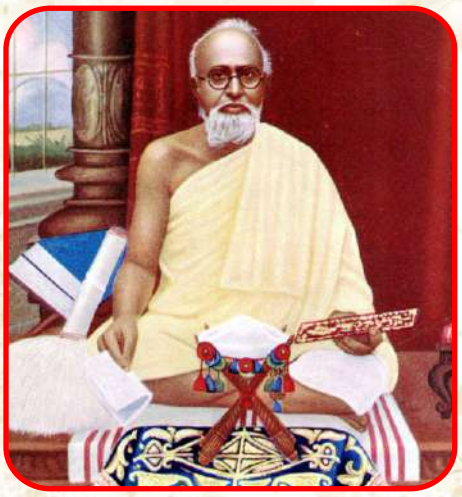

Life Style of Jain Sadhu

They do not use any vehicles such as car, bus, train etc.

They do Loch to remove their hair

Travel

- जैन साधु एक जगह से दूसरी जगह पैदल चलकर जाते हैं। उसे विहार कहते हैं।
- वे कभी कोई वाहन जैसे कि गाड़ी, बस, रेलगाड़ी आदि का उपयोग नहीं करते।
- वे बारिश के मौसम (चातुर्मास) में जीव रक्षा हेतु एक जगह पर ही रहते हैं।

Life

- जैन साधु सुबह जल्दी उठते हैं और भगवान महावीर के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं।
- वे धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं।
- उनमें प्रेम, करुणा और पवित्रता होती है।
- वे प्रवचन देते हैं और हमें अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं।

They are Full of Love Compassion and purity

14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

14 स्वप्न
14 Auspicious Dreams

1

गजराज
Elephent

2

वृषभ (Bull)

3

केसरी सिंह
Lion

4

लक्ष्मी माता
Goddess Laxmi

5

फूलों की माला
Garland of Flowers

6

चंद्र (Full Moon)

7

सूर्य (Sun)

14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

14 स्वप्न
14 Auspicious Dreams

8

ध्वज
Dhwaj

9

पूर्ण कलश
(Purna Kalash)

10

पद्म सरोवर
Padma Sarowar

11

रत्नाकर
Ratnakar

12

देव विमान
Dev Viman

13

रत्नराशी
(Heap of Gems)

14

अग्निशिखा
(Agni Shikha)

अष्टमंगल

8 शुभ प्रतीकों
का समूह है

1

दर्पण
Mirror

2

भद्रासन
(Throne)

3

वर्धमानक
Vardhamanak

4

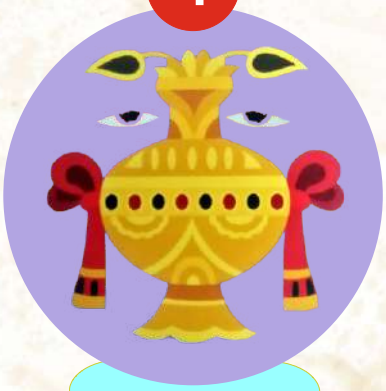

कलश
Kalash

5

मीन युगल
Pair of Fish

6

श्रीवत्स
(Shrivatsa)

7

स्वस्तिक
(Swastik)

8

नंदावर्त
(Nandavarta)

प्रदक्षिणा के दोहे
Pradakshina Ke Dohe

काल अनादि अनंत मे, भव भ्रमण नो नहीं पार
ए भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा देऊं त्रण बार ॥

भमतिमां भमता थकां, भव भावठ दूर पलाय
दर्शन-ज्ञान-चरित्र रूप,प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥

दर्शन-ज्ञान-चरित्र ए, रत्नत्रयी शिवद्वार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे भवदु:ख भंजनहार ॥

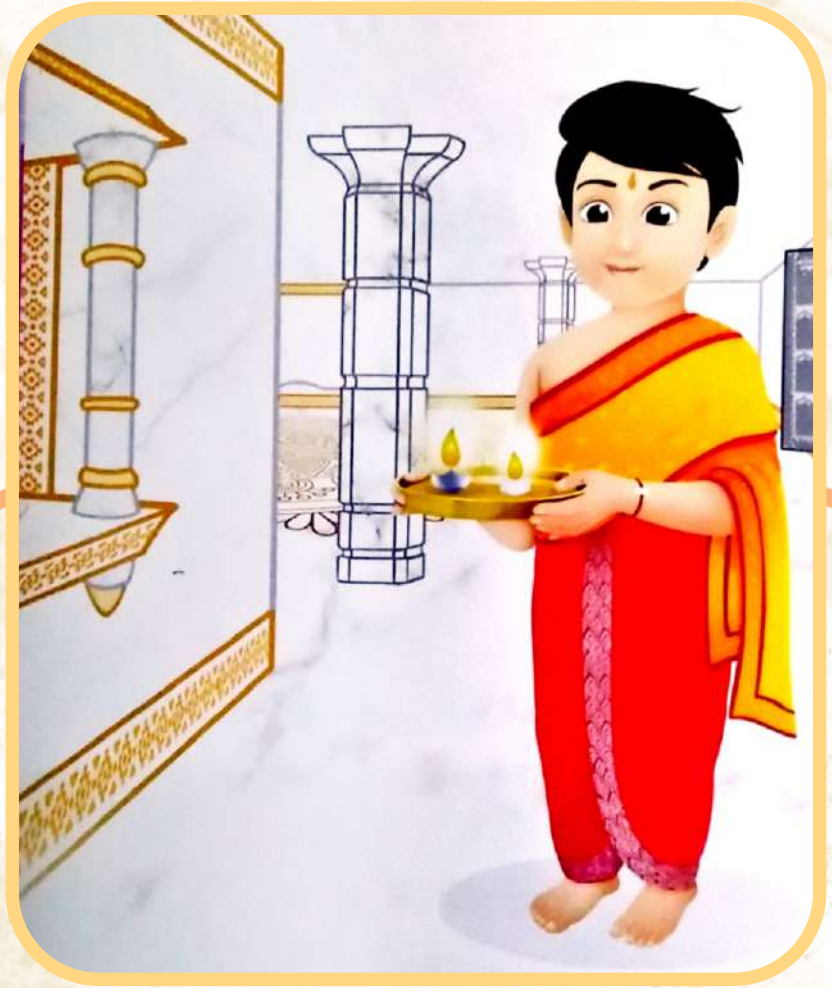

घर घर पाठशाला

पूजा के प्रकार
Types of Puja

1. द्रव्य पूजा

अंग पूजा
जो पूजा भगवान को स्पर्श करके होती है

चंदन पूजा

जल पूजा

पुष्प पूजा

फल पूजा

धूप पूजा

अग्र पूजा
जो पूजा भगवान को बिना स्पर्श किए (सामने रहकर) की जाती है

नैवेद्य पूजा

दीपक पूजा

अक्षत पूजा

चैत्यवंदन

2. भाव पूजा

भाव पूजा द्रव्य पूजा के बाद की जाती है और वह भावों की शुद्धता में वृद्धि कराती है। भाव पूजा में चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवन आदि का समावेश होता है।

सिद्धचक
(Siddhachakra)

देव तत्व

नाम	वर्ण	गुण
अरिहंत	सफेद	12
सिद्ध	लाल	8

गुरू तत्व

नाम	वर्ण	गुण
आचार्य	पीला	36
उपाध्याय	हरा	25
साधु	काला	27

धर्म तत्व

नाम	वर्ण	गुण
दर्शन	सफेद	67
ज्ञान	सफेद	51
चरित्र	सफेद	70
तप	सफेद	50

पंचपरमेष्ठि गुण

अरिहन्त		सिद्ध		आचार्य		उपाध्याय		साधु		कुल
12	+	8		36	+	25	+	27	=	108

चरित्र के उपकरण
Charitra Upkaran

साधु के उपकरण

ओघा

मुहपत्ति

पोथी सापड़ा

स्थापनाचार्य

पात्रा

घड़ा

तरपणी

चेतना

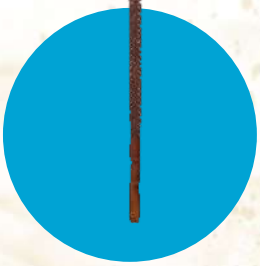
दंडा

बटवा

सूपड़ी-पूंजणी

पुस्तक

नवकारवाली

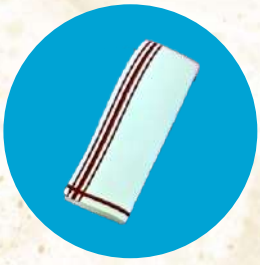
कामली

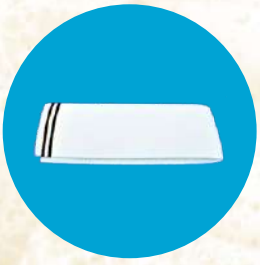
आसन

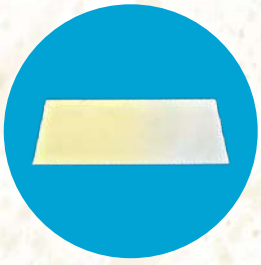
संथारा

चोलपट्टा

दंडासन

चरित्र के उपकरण
Charitra Upkaran

श्रावक के उपकरण

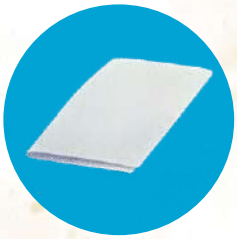

मुंहपत्ती

चरवला

नवकारवाली

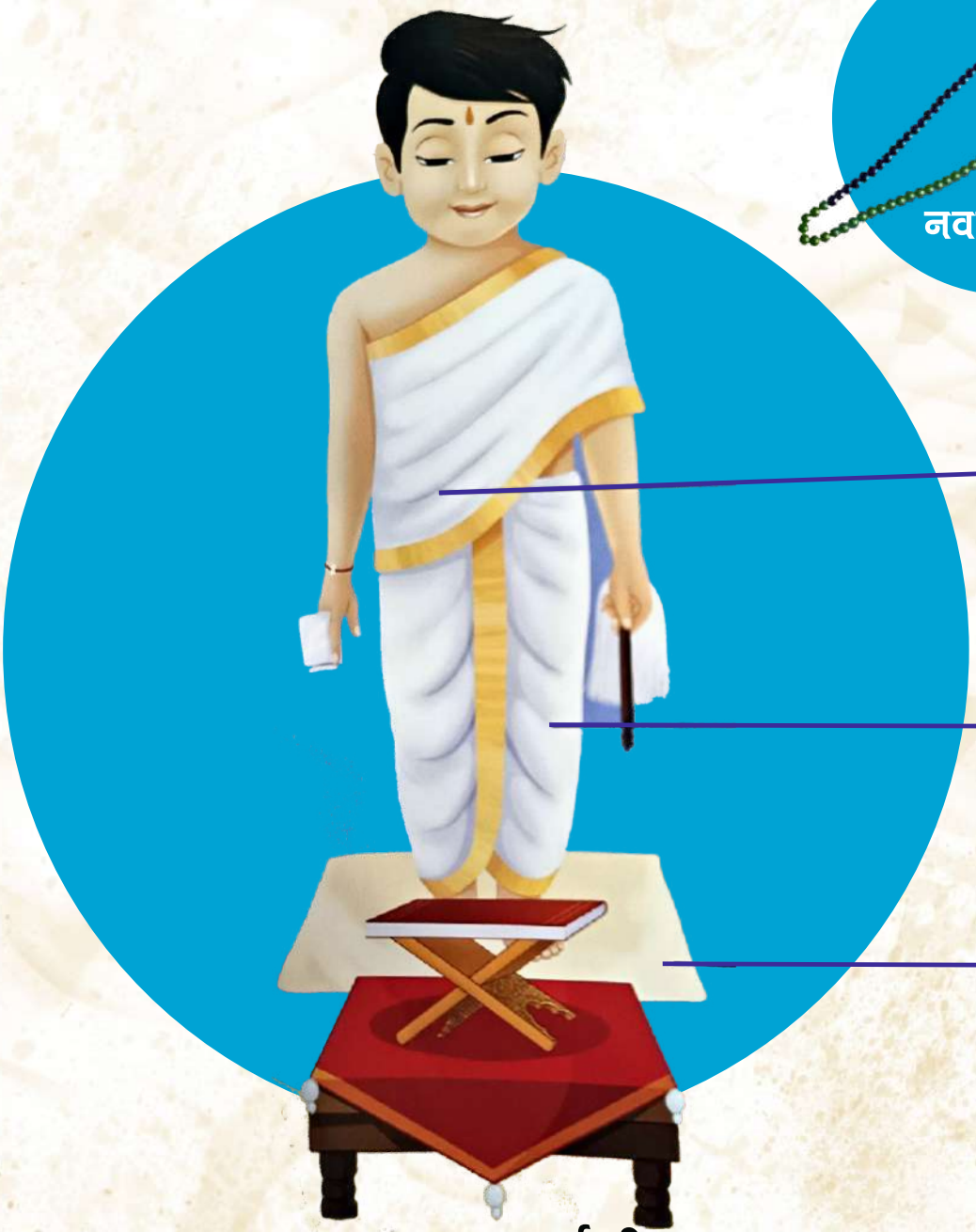

सामायिक का खेस

सामायिक का धोती

आसन

स्थापनाचार्यजी

दर्शनं देव-देवस्य के दोहे

दर्शनं देव-देवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम् ॥१॥
प्रभु दर्शन सुख सम्पदा, प्रभु दर्शन नव निध ।
प्रभु दर्शन से पामिये, सकल पदारथ सिद्ध ॥ २ ॥
भावे जिनवर पूजिये , भावे दीजिए दान ।
भावे भावना भाविये, भावे केवल ज्ञान ॥ ३ ॥
हे प्रभो ! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हम से कीजिए ॥
लीजिए हम को शरण में हम सदाचारी बनें
ब्रह्मचारी धर्म-रक्षक, वीर व्रत-धारी बनें ॥ ४ ॥

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥

(अन्नत्थ सूत्र पढ़ते हुए एक 'लोगस्स' का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार काउसग्ग करिये)

7. लोगस्स (नाम-स्तव) सूत्र

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमई च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।। 2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्जं च
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग- बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।। 6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर वर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।। 7।।

(फिर खमासमण दीजिए)

गुरू वल्लभ पूजन

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में, मैं नित उठ शीश नवाता हूं।

मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दर्श तुम्हारा पाता हूं।

मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है, इस ही का मुझे सहारा है।

इस नाम में ऐसी बरकत है, जो चाहता हूं सो पाता हूं।

जब याद तेरे गुण आते हैं, दु:ख दर्द सभी मिट जाते हैं।

मैं बनकर मस्त दीवाना फिर, बस गीत तेरे ही गाता हूं।

गुरू-राज तपस्वी महामुनि, सरताज थे तुम महाराजों के।

मैं इक छोटा सा सेवक हूं, कुछ कहता हूं शर्माता हूं।

गुरू-चरणों में है अर्ज यही, बढ़ती दिन रात रहे भक्ति।

मेरा मानुष जन्म सफल होवे, यही भक्ति का फल चाहता हूं।